इकाई 20 एक केस अध्ययन – कामकाजी महिलाओं के बच्चों के लिए मोबाइल क्रैश

इकाई की रूपरेखा

20.1 प्रस्तावना

20.2 कार्यक्रम का तार्किक आधार

20.3 विस्तार एवं उपस्थिति

20.4 बच्चों की केन्द्र में उपस्थिति की अवधि

20.5 क्षेत्रीय कार्यक्रम

20.5.1 स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा पोषण

20.5.2 शिक्षा तथा संज्ञानात्मक विकास

20.5.3 जन समुदाय तक पहुँचना

20.6 मोबाइल क्रैश – कुछ संगठनात्मक पहलू

20.6.1 एकीकरण का सिद्धांत

20.6.2 बहु-कुशल कार्यकर्ता

20.6.3 कर्मचारी प्रशिक्षण

20.7 मोबाइल क्रैश की अद्वितीय विशेषताएँ

20.7.1 सहायक उपाय

20.7.2 पर्यवेक्षी उपाय

20.8 बाल देखभाल सेवाओं के लिए आर्थिक संसाधन जुटाना

20.9 कार्यक्रम का प्रभाव

20.10 सारांश

20.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

20.1 प्रस्तावना

महानगर नई दिल्ली, मुम्बई महानगर की तरह निरंतर फैल रहा है । रोज़गार की तलाश में मज़दूर अपने गाँव छोड़ शहरों की ओर आ रहे हैं। पुरुष एवं महिलाएँ, अपने छोटे बच्चों तथा सामान को कंधे पर उठाए, एक स्थायी रोज़गार की तलाश में, राजमार्गों एवं उपमार्गों पर पैदल चलते हुए, महानगर पहुँचते हैं । इनमें से कई निर्माण स्थलों पर मज़दूरी करने लग जाते हैं और यहाँ इन्हें कई तरह के काम करते हुए देखा जा सकता है । इन मजदूरों की कोई यूनियन नहीं होती । कुछ मज़दूर अनौपचारिक रूप से एक व्यक्ति के अधीन काम करने लगते हैं, जिसे वे अपना "नेता" मान लेते हैं। यही व्यक्ति फिर भवन के ठेकेदार से इन मज़दूरों के काम करने की शर्तें तय करता है । दिल्ली और मुम्बई में ये परिवार इन शहरों के सबसे निर्धन निवासियों में से हैं । ये चाहे जितने समय के लिए भी किसी स्थल पर काम करें, वास्तव में ये अस्थायी ही माने जाते हैं; कोई भी शहरी प्रशासक उनकी आम जरूरतों की ओर ध्यान नहीं देता । इस वर्ग में, महिलाएँ आए दिन बच्चों को जन्म देतीं हैं और उनका पालन-पोषण करतीं हैं ।

शहरों में रहने वाले गरीब बच्चे सबसे निकृष्ट परिवेश में रहते हैं । शहरी क्षेत्रों में रहने वाले निर्धन व्यक्ति प्राय: वे होते हैं जो हाल ही में शहरों में आकर बसे होते हैं । ये अपने गाँव से सम्पर्क खो

चुके होते हैं, और इसलिए इन्हें अपने विस्तृत पारिवारिक दायरे और समुदाय से किसी भी प्रकार की सहायता मिलने की उम्मीद नहीं होती ।

ये ग्रामीण प्रवासी पुरुष एवं स्त्रियाँ, जो निर्माण स्थलों पर कार्य पाते हैं, कठिन से कठिन और कठोर काम करते हैं, और इन कामों में से कम दक्षता वाले कार्य महिलाओं को सौंप दिए जाते हैं । इतने खतरे होने के बावजूद, इनके बच्चे निर्माणस्थल के आसपास खेलते नज़र आते हैं । एक टोकरी में फटे हुए कपड़ों में लिपटा हुआ एक शिशु, मिट्टी में सने बच्चे – दिशाहीन, उपेक्षित, शाम होने तथा माता के लौटने की इंतज़ार करते हुए – ऐसे दृश्य शहर के निर्माणास्थल पर प्राय: देखने को मिलते हैं ।

ऐसे ही परिवेश में मोबाइल क्रैश की परिकल्पना ने जन्म लिया । इस इकाई में हम इस संस्था और इसकी गतिविधियों का गहन अध्ययन करेंगे ।

उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- ''मोबाइल क्रैश'' की आवश्यकता का विवेचन कर सकेंगे
- मोबाइल क्रैश के क्षेत्र स्तर के कार्यक्रम के विभिन्न घटकों की रूपरेखा बता सकेंगे
- मोबाइल क्रैश के कुछ महत्वपूर्ण संगठनात्मक पहलुओं का विश्लेषण कर सकेंगे
- मोबाइल क्रैश के प्रशिक्षण कार्यक्रम और पर्यवेक्षण की प्रणाली की समालोचना कर सकेंगे
- मोबाइल क्रैश की अद्वितीय विशेषताओं का संक्षिप्त वर्णन कर सकेंगे
- मोबाइल क्रैश को प्राप्त धन के स्रोतों की सूची तैयार कर सकेंगे, और
- मोबाइल क्रैश कार्यक्रम के प्रभाव को समझ सकेंगे ।

20.2 कार्यक्रम का तार्किक आधार

मोबाइल क्रैश की आवश्यकता सबसे पहले सुश्री मीरा महादेवन ने महसूस की, और इसी आवश्यकता को कार्यरूप देते हुए उन्होंने 1964 में इस संस्था की स्थापना की । सुश्री मीरा महादेवन एक स्वतंत्र लेखिका (freelance writer) थीं और समाज कार्य में औपचारिक रूप से उन्होंने कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया था । यह तब की बात है जब गाँधी शताब्दी प्रदर्शनी राजघाट पर निर्माणाधीन थी और इन मज़दूरों के बच्चे निर्माण स्थल पर असुरक्षित और खतरनाक स्थितियों में इधर-उधर पड़े दिखाई देते थे । उनकी इस स्थिति की ओर मीरा का ध्यान गया और वह इसके बारे में कुछ करने में जुट गई। **इस प्रकार कामकाजी महिलाओं के बच्चों के लिए ''मोबाइल क्रैश'' नामक एक संस्था की शुरुआत हुई।**

मीरा ने देखा कि सभी जगह दर्जनों बच्चे और शिशु रोड़ी पर, पत्थर पर, बज़री-रेत पर या कंटीले वृक्षों की छाया के नीचे, या कीचड़दार पानी की टंकियों के पास दिनभर पड़े रहते थे । ठेकेदार और आम जनता का ध्यान उनकी ओर नहीं जाता था । मीरा ने उन बच्चों की स्थिति को समझा और यह महसूस किया कि बच्चे होते हुए वे अपने बचपन से वंचित हैं – इसी से इस आंदोलन (मोबाइल क्रैश) की शुरुआत हुई, जो 25 वर्ष बाद, आज भी विषम परिस्थिति में एक साहसी प्रयास समझा जाता है ।

इन शिशुगृह केन्द्रों की ''गतिशीलता'' (अंग्रेज़ी शब्द 'मोबाइल' का अर्थ है गतिशील) का स्पष्टीकरण निर्माण उद्योग (construction industry) के ही संदर्भ में समझा जा सकता है । श्रमिकों के विभिन्न वर्ग नींव के लिए जमीन खोदने, नींव डालने, ईटें लगाने, कंक्रीट लगाने, परिष्करण (finishing), काश्तकारी इत्यादि के काम करते हैं । अत: श्रमिकों के शिविर अस्थायी होते थे, उनकी

झोपड़ियाँ काम-चलाऊ होती थीं तथा अकुशल मज़दूरों को स्थायी दीर्घकालीन रोज़गार मिलना असम्भव होता था । अत: जब एक भवन की नींव डालने का काम पूरा हो जाता है, तो ये मज़दूर परिवार वहाँ से चले जाते हैं और अन्य श्रमिकों के परिवार, जो भवन निर्माण के अन्य कार्यों से संबंधित हैं, वहाँ आ जाते हैं । जब भवन पूरे बन जाते, अथवा उसके एकाध महीने पहले, वहाँ कोई परिवार नहीं रह जाता और मोबाइल क्रैश के कर्मचारी वह केन्द्र बंद करके, वहाँ केन्द्र खोल लेते जहाँ कोई अन्य भवन का निर्माण शुरू हुआ होता है ।

बच्चों की देखभाल के लिए यह केन्द्र शुरू करने में कई कठिनाइयाँ थी । प्राय: बच्चों को रखने के लिए कोई भवन नहीं होता था, पानी उपलब्ध नहीं था तथा योग्य कर्मचारी नहीं मिलते थे । काम-चलाऊ (अस्थायी) स्थान का प्रयोग किया जाता था, कई बार एक टैन्ट, एक झोपड़ी, तहखाना अथवा किसी कमरे का एक भाग इस काम के लिए प्रयुक्त होते थे। गतिशीलता मूलमंत्र थी। किसी भी समय, केन्द्र के कर्मचारियों तथा बच्चों को जगह बदलने के लिए तैयार रहना होता था – निर्माण स्थल पर ही एक जगह से दूसरी जगह – अथवा किसी बिल्कुल ही अलग निर्माण स्थल पर। **अत: नाम ''मोबाइल क्रैश'' (गतिशील शिशुगृह) – परिवारों के स्थानांतरण तथा केन्द्रों के अस्थायित्व का प्रतीक है । अत: 'गतिशीलता' प्रतिदिन बच्चों के शिशुगृह आने और जाने के नहीं, अपितु प्रवासियों की आवश्यकता को दर्शाती है ।**

मोबाइल क्रैश के लिए कई स्रोतों से सहायता मिली । मित्रों एवं शुभचिंतकों को एकत्र किया गया, संस्था की स्थापना के लिए विशेषज्ञों की सलाह ली गई और वित्त के स्रोतों का पता लगाया गया । अनेक भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय धमार्थ संस्थाओं ने वित्तीय सहायता प्रदान की । इस प्रकार प्रवासी बच्चों के कल्याण हेतु एक आन्दोलन शुरू हुआ – देखने में जिसकी शुरुआत साधारण विचारशीलता एवं सामान्य बुद्धि की बात लगती थी । लेकिन यह दर्शाता है कि किस प्रकार एक उचित व सही कार्यवाही सशक्त हो सकती है ।

सबसे पहले शिशु पर ध्यान केन्द्रित किया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि केन्द्रों के लिए ''शिशुगृह'' (क्रैश) शब्द क्यों प्रयोग किया गया । प्रारम्भिक कार्य थे – माताओं को अन्य लोगों की देखरेख में शिशु को छोड़कर जाने के लिए राजी करना; स्वच्छता, आहार तथा टीकाकरण की नित्यचर्या की योजना बनाना; शिशुओं की देखभाल के लिए डॉक्टरों को बुलाना । परिवार में प्राय: प्रयुक्त होने वाले कपड़े के झूलें की तरह पालने बनाए गए । आसपास का वातावरण स्वच्छ और साधारण रखा गया । इससे धीरे-धीरे माताओं में विश्वास जगा । वे दिन में दो-तीन बार अपने बच्चों को स्तनपान कराने आतीं और शिशुगृह के कार्यकर्ताओं से अनौपचारिक बातचीत के दौरान, बच्चों की देखभाल हेतु कुछ विचार ग्रहण करतीं ।

जब माताएँ बच्चों को क्रैश में छोड़ जातीं; तो उनके (बच्चों) सहोदरों का एक झुंड जो पहले उनकी देखभाल करता था, शिशुओं के आसपास इकट्ठा हो जाता । यह स्पष्ट हो गया कि वे बड़े बच्चे किसी औपचारिक विद्यालय नहीं जाते थे क्योंकि उनके अभिभावकों का कोई स्थायी निवास नहीं था ।

इस तरह एक से तीन साल की उम्र के बच्चों और शालापूर्व आयु के बच्चों को केन्द्र में लिया गया; बाद में 12 वर्ष की आयु तक के बच्चों को भी केन्द्र की गतिविधियों में शामिल कर लिया गया ।

इसके अलावा, जबकि प्रारम्भ में मोबाइल क्रैश का आरंभ निर्माण स्थलों पर प्रवासी मजदूरों के बच्चों के लिए हुआ, सन् 1976 से इस संस्था ने मलिन बस्तियों (slums) तथा पुनर्वास बस्तियों (resettlement colonies) में भी सेवा प्रदान करनी शुरू कर दी ।

सन् 1970 में निर्माण स्थलों पर गतिशील शिशुगृह के तीन केन्द्र थे । क्रमश: यह संख्या बढ़ी और 1993-94 तक, किसी भी समय पर, मुम्बई तथा दिल्ली में 20 से 25 केन्द्र हुआ करते थे – अधिकांश क्रैश निर्माण स्थलों पर होते थे और कुछ शहरी मलिन बस्तियों और पुनर्वास कॉलोनियों में। छोटी सी शुरुआत से मोबाइल क्रैश एक संस्था के रूप में बढ़ा और अब, यह संस्था, किसी भी समय पर, औसतन 4000 से 5000 बच्चों को सेवा प्रदान करती है । बच्चों की संख्या में इस वृद्धि के साथ-साथ, संस्था के क्षेत्रीय कर्मचारियों में भी वृद्धि हुई है ।

आज इस संस्था की पहुँच विस्तृत है । इस संस्था द्वारा शिशुगृह कार्यकर्ता, बालवाड़ी कार्यकर्ताओं (बाल सेविकाओं) और अनौपचारिक शिक्षा से संबंधित कार्यकर्ताओं के लिए हाल ही में प्रकाशित नवीन प्रशिक्षण तरीकों संबंधी पुस्तकें, इस बात का प्रमाण हैं कि किस दृढ़ विश्वास के साथ मोबाइल क्रैश के कार्यकर्ताओं का अनुभव लिखित रूप से प्रस्तुत किया और फैलाया जा रहा है ।

मोबाइल क्रैश – कुछ महत्वपूर्ण जानकारी

उद्देश्य
- निर्माण स्थलों, मलिन बस्तियों एवं पुनर्वास बस्तियों की कामकाजी महिलाओं के बच्चों को स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा एवं मनोरंजन संबंधी समेकित दिवस देखभाल उपलब्ध कराना ।
- अपनी संस्था तथा अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करके स्वंयसेवी क्षेत्र में बच्चों की देखभाल से संबंधित व्यवसायी संवर्ग विकसित करना।

लाभार्थी समूह
- मलिन बस्ती तथा पुनर्वास बस्तियों में रहने वाली कामकाज़ी महिलाओं तथा प्रवासी श्रमिकों के बच्चे।

काम करने का समय
- प्रात: 8.30 बजे से सायं 4.30 बजे तक, सप्ताह में 6 दिन, वर्ष के 12 महीने ।

बच्चों का वर्गीकरण
- शिशुगृह खंड (0 – 2 +वर्ष)
- बालवाड़ी खंड (3 – 5 +वर्ष)
- अनौपचारिक शिक्षा खंड (6 – 12 +वर्ष)

स्रोत : मोबाइल क्रैश की 1993-94 की वार्षिक रिपोर्ट ।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित कथनों के लिए सबसे उपयुक्त उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए ।

i) मोबाइल क्रैश सन् 1969 में सबसे पहले किसके द्वारा स्थापित किया गया :

क) इंदिरा गांधी

ख) ताराबाई मोदक

ग) मीरा महादेवन

घ) मीरा नायर

ii) मोबाइल क्रैश किसकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रारम्भ हुआ :

क) कोयले की खानों में काम करने वाले बच्चे

ख) कारखानों में काम करने वाले बच्चे

ग) निर्माण स्थलों पर रह रहे बच्चे

घ) मलिन बस्तियों मे रह रहे बच्चे

iii) मोबाइल क्रैश ने इनके लिए नवीन प्रशिक्षण तरीके बनाए

क) शिशुगृह कार्यकर्ता

ख) बालवाड़ी कार्यकर्ता

ग) अनौपचारिक शिक्षा कार्यकर्ता

घ) उपर्युक्त सभी

2) मोबाइल क्रैश में ''मोबाइल'' शब्द किसकी गतिशीलता की ओर इंगित करता है । आप इस गतिशीलता को कैसे स्पष्ट करेंगे ?

.....

.....

.....

.....

.....

20.3 विस्तार एवं उपस्थिति

दिवस देखभाल केन्द्र बड़े निर्माण स्थलों, मलिन बस्तियों एवं पुनर्वास कॉलोनियों में स्थित होते हैं । किसी भी कार्यस्थल पर केन्द्र अस्थाई होता है और एक बार जब निर्माण कार्य पूरा हो जाता है, तो वह केन्द्र बंद हो जाता है और किसी दूसरे कार्यस्थल पर एक नया केन्द्र खुल जाता है । गंदी बस्तियों एवं पुनर्वास कालोनियों में केन्द्र अधिक स्थायी होते हैं ।

सन् 1969 के प्रारम्भ से लेकर सन् 1994 तक मोबाइल क्रैश ने दिल्ली, मुम्बई एवं पुणे में कुल मिलाकर 362 दिवस देखभाल केन्द्र खोले हैं (तालिका 20.1) ।

तालिका 20.1 : 1969 से 1994 तक चलाए गए केन्द्रों की संचित संख्या

	दिल्ली	मुम्बई	पुणे	अखिल भारतीय
प्रारम्भ करने के वर्ष	1969	1972	1980	—
कुल चालू केन्द्र	194	143	25	362

स्रोत : मोबाइल क्रैश की वार्षिक रिपोर्ट, 1993-94

आइए, एक वर्ष के दौरान चल रहे केन्द्रों की संख्या का उदाहरण लें । वर्ष 1993-94 में कुल 60 केन्द्र चलाए गए । पिछले कुछ वर्षों की भाँति जबकि अधिकांश केन्द्र निर्माण स्थलों पर कार्यरत थे, कुछ पुनर्वास तथा मलिन बस्तियों में भी चलाए गए । एक वर्ष में कार्यरत 60 केन्द्रों की संचित संख्या में से 47 निर्माण स्थलों पर, 6 मलिन बस्तियों में (मुम्बई एवं दिल्ली में प्रत्येक में तीन) और 7 दिल्ली की पुनर्वास कॉलोनियों में थे।

विस्तार के संदर्भ में देखें तो सन् 1994 में मोबाइल क्रैश के द्वारा 13,783 बच्चे लाभान्वित हुए । इनमें से 11,340, अर्थात 82 प्रतिशत बच्चे निर्माण स्थलों पर एवं 2443, अर्थात 18 प्रतिशत पुनर्वास कालोनियों तथा मलिन बस्तियों से थे ।

इस विस्तार के अंतर्गत, लड़के-लड़कियों का अनुपात पिछले कुछ वर्षों के समान ही था । मोबाइल क्रैश के केवल प्रारम्भिक वर्षों में ही ऐसा था कि बच्चे का लिंग एक कारक था, जिसके कारण लड़कियाँ अनुपात में कम थीं। ऐसा असंतुलन अब नहीं है ।

20.4 बच्चों की केन्द्र में उपस्थिति की अवधि

निर्माण स्थलों पर काम करने वाले परिवार एक स्थान पर टिके नहीं रहते, जैसा कि चर्चा की जा चुकी है । निश्चय ही यह इस बात को प्रभावित करता है कि बच्चा कितने दिन तक केन्द्र में आएगा और वहाँ हो रही गतिविधियों से कितना प्रभावित/सीख पाएगा । बच्चों की उपस्थिति की यह अनियमितता शिशुगृह कार्यकर्ताओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती है – क्योंकि कम से कम समय में उन्हें बच्चों को ज्यादा से ज्यादा लाभ देने का प्रयास करना पड़ता है ।

पिछले दो दशकों में कई ऐसे प्रयास किए गए हैं कि जो बच्चा एक बार मोबाइल क्रैश के किसी भी केन्द्र में भर्ती हो, उस बच्चे के उस केन्द्र से चले जाने के पश्चात भी उससे कुछ संपर्क रहा । एक केन्द्र से चले जाने के पश्चात यह बच्चे अक्सर अन्य केन्द्रों में भर्ती हो जाते हैं, लेकिन जैसा कि केन्द्रों में प्रवासी बच्चों पर किए गए दो शोध अध्ययन दर्शाते हैं, **65 से 75 प्रतिशत बच्चों की एक ही केन्द्र में लगातार आने की अवधि तीन महीने से कम ही होती है** । यह आँकड़े प्रत्येक वर्ष प्रत्येक शहर में कुछ हद तक अलग हैं, लेकिन कुल मिलाकर मोबाइल क्रैश के केन्द्रों में अधिकांशत: बच्चों का प्रवास तीन महीने से कम ही होता है ।

20.5 क्षेत्रीय कार्यक्रम

मोबाइल क्रैश के क्षेत्रीय कार्यक्रम को हम मुख्यत: तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं :

- स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण
- शिक्षा और संज्ञानात्मक विकास
- जन-समुदाय तक पहुँचना

मोबाइल क्रैश कार्यक्रम की अन्य गतिविधियों में शामिल हैं : **अन्य वर्गों को प्रशिक्षण देना, प्रलेखन और अनुसंधान, तथा बाल कल्याण क्षेत्र में कार्यरत अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ तालमेल बनाना ।**

20.5.1 स्वास्थ्य, स्वच्छता तथा पोषण

मोबाइल क्रैश 0-12 वर्ष की संवेदनशील आयुवर्ग के बच्चों को स्वास्थ्य संबंधी सेवाएँ प्रदान करता है। बच्चे तीन आयु वर्गों में विभाजित किए जाते हैं :

0-2 + वर्ष : शिशुगृह अनुभाग जिसमें कभी-कभी 1 महीने के छोटे बच्चे भी शामिल होते हैं

3-5 + वर्ष : शालापूर्व बच्चों के लिए बालवाड़ी खंड

6-12 वर्ष : अनौपचारिक शिक्षा (नान फॉरमल एजुकेशन, Non Formal Education, NFE) अनुभाग उन बच्चों के लिए है जो या तो विद्यालय में नहीं जा सकते अथवा जिन्हें औपचारिक शिक्षा प्रणाली के लिए तैयार किया जाता है।

स्वास्थ्य सेवाएँ

चिकित्सक नियमित रूप से केन्द्र में बच्चों और अभिभावकों को रोग निरोधक (curative) एवं निवारक (preventive) चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करने जाते हैं । केन्द्र के कर्मचारी चिकित्सक द्वारा निर्देशित आवश्यक अनुवर्ती कार्यवाही करते हैं । केन्द्र पर औषधियाँ उपलब्ध कराई जातीं हैं । बच्चों एवं मजदूरों की प्राथमिक उपचार आवश्यकताओं को भी केन्द्र पूरा करता है । यदि डॉक्टर किसी बच्चे को अस्पताल ले जाने की सलाह देता है, तो पहली बार मोबाइल क्रैश का कोई कर्मचारी, बच्चे व उसके परिवार के किसी सदस्य के साथ अस्पताल जाता है, जिससे उन्हें आवश्यक चिकित्सीय सहायता मिल सके । एक बार जब अभिभावक अस्पताल के तौर-तरीकों से परिचित हो जाते हैं, तो कर्मचारी उनके साथ नहीं जाते । कर्मचारी बहुत सी बीमारियों का प्रारम्भ में ही पता लगाने और समय रहते उनके उपचार संबंधित अपेक्षित जानकारी रखते हैं । जिस अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में यह बच्चे रहते हैं, उन परिस्थितियों में उनके सम्पूर्ण स्वास्थ्य को सुधारने के लिए निरोधक उपाय ही पर्याप्त नहीं हैं । इसके लिए निवारक देखभाल पर ज्यादा बल देना चाहिए । जिन निवारक उपायों पर बल दिया जाता है, उनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

- टीकाकरण
- नियमित पूरक पोषण

- कुपोषित एवं बीमार बच्चों, वयस्कों, गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए विशेष आहार
- केन्द्र में बच्चों एवं अभिभावकों के लिए स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी शिक्षा

सभी केन्द्रों में टीकाकरण सेवाओं की व्यवस्था की जाती है । मलिन बस्तियों और पुनर्वास कालोनियों के संबद्ध प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र उस क्षेत्र के बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण करते हैं । निर्माण स्थल पर चिकित्सक आकर टीकाकरण करते हैं । फिर भी, बहुत से बच्चों के मामलों में मज़दूरों के स्थानान्तरण के कारण, टीकाकरण अनुसूची का पूर्णत: अनुसरण नहीं हो पाता । कभी-कभी आँखों और दाँतों की नि:शुल्क जाँच भी की जाती है ।

पूरक पोषण

यह संस्था प्रत्येक केन्द्र पर पूरक पोषण कार्यक्रम चलाती है, जिसके अन्तर्गत दिन में उपयुक्त अनुपात में पोषक खाद्य पदार्थों जैसे दूध, अंकुरित दालें, अन्न एवं मौसमी सब्जियों की आपूर्ति की जाती है ।

विटामिन ए तथा डी, मल्टी-विटामिन और लौह तत्व की खुराक भी दी जाती है । वे बच्चे एवं माताएँ जो सामान्य से कम वज़न के पाए जाते हैं, उन्हें केन्द्र में आने वाले चिकित्सक द्वारा विशेष आहार का परामर्श दिया जाता है । उन्हें तब वह विशेष आहार दिया जाता है ।

समुदाय के साथ बैठकों के दौरान, बाल सभा (बच्चों का मंच) और **लोक दूत** (नुक्कड़ नाटक मंडली) द्वारा प्रस्तुत किए गए नाटकों और शिविर के माध्यम से माताओं, बच्चों एवं समुदाय को स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी शिक्षा दी जाती है ।

20.5.2 शिक्षा तथा संज्ञानात्मक विकास

शिशुगृह अनुभाग में शिशुओं के संज्ञानात्मक विकास की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है । 0-2 वर्ष के बच्चे के उद्दीपन हेतु उन्हें कम लागत के रंगबिरंगे खिलौने जैसे झुनझुने, बज़ने वाले खिलौने और भरे हुए खिलौने खेलने के लिए दिए जाते हैं । बाहरी खेलकूद और हाव-भाव के साथ गीत गाने पर भी बल दिया जाता है । छोटे बच्चों की रेत, पानी, बालू तथा लकड़ी के गुटकों (blocks) से खेलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि उनमें सृजनात्मकता तथा प्रयोग करने की भावना पैदा हो सके ।

बालवाड़ी (शालापूर्व) अनुभाग 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए है। यहाँ शालापूर्व शैक्षिक सामग्री, कहानी, गीत, कविताओं और मुक्त खेल के माध्यम से सरल शैक्षिक संकल्पनाओं से बच्चों को परिचित कराया जाता है ।

अनौपचारिक शिक्षा अनुभाग अथवा प्राथमिक अनुभाग में 6-12 वर्ष के बच्चे को अनौपचारिक विधि द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है । खेल के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया, संरचित खेल, कागज़, पत्तों, अखबारी काग़ज, रंगों, पुरानी पत्रिकाओं, फ्लैश कार्डों आदि के माध्यम से आयोजित क्रियाकलाप उन बच्चों के लिए सीखने की प्रक्रिया को रोचक व सुलभ बनाते हैं, जिन्हें स्कूली शिक्षा का इतना अनुभव नहीं है । धीरे-धीरे बच्चों को उन पाठ्य पुस्तकों से परिचित करवाया जाता है जो स्थानीय विद्यालयों में प्रयोग की जातीं हैं, ताकि जब वे विद्यालय में भर्ती हों तो वहाँ की औपचारिक शिक्षा प्रणाली उन्हें अपरिचित और कठिन न लगे ।

सभी बड़े बच्चों को पड़ौस के विद्यालयों में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । क्रैश के कार्यकर्ता विद्यालय की छुट्टी के पश्चात, गृह-कार्य में बच्चों की सहायता करते हैं । उनका प्राथमिक उद्देश्य यह निश्चित करना है कि बच्चे मुख्यधारा का एक अंग बन जाएँ तथा उनके विद्यालय को छोड़ने की दर (drop-out rate) कम हो जाए । उदाहरण के लिए, 1993-94 में, 514 बच्चे नगर-निगम के विद्यालयों में भर्ती किए गए (दिल्ली, मुम्बई और पुणे को मिलाकर), जिनमें से 328 उत्तीर्ण हुए, 15 अनुतीर्ण हुए तथा 17 ने पढ़ाई छोड़ दी ।

यहाँ एक **छात्रवृत्ति की योजना है** जो बच्चों को आर्थिक सहायता प्रदान करती है । इस योजना के अन्तर्गत आठवीं कक्षा तक के बच्चों को 50/- रुपये प्रतिमाह तथा नौवीं कक्षा और उससे उच्च कक्षा के बच्चों को 100/- रुपये प्रतिमाह की धन-राशि दी जाती है । सन् 1994 में मोबाइल क्रैश संस्था से छात्रवृत्ति पाने वाले बच्चों की कुल संख्या 98 थी।

कई सामूहिक क्रियाकलाप भी आयोजित किए जाते हैं ।

बाल सभा बच्चों का एक मंच है जो बच्चों में नेतृत्व के गुणों को विकसित करता है । यह मंच भूमिका अभिनय द्वारा बच्चों में आत्म-विश्वास पैदा करता है और विस्तृत विषयों पर चर्चा द्वारा जागृति पैदा करता है । बाल सभा प्रत्येक शनिवार आयोजित की जाती है । ऐतिहासिक स्थलों, संग्रहालयों तथा उद्यानों में भ्रमण पर ले जाने की व्यवस्था की जाती है ।

क्षेत्रीय स्तर (Zonal level) पर **बाल मेले** आयोजित किए जाते हैं । प्रदर्शनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए एक विषय चुना जाता है । बाल मेला आयोजित करने से एक क्षेत्र (लगभग छ: केन्द्रों) के बच्चों तथा कर्मचारियों को साथ-साथ काम करने का अवसर मिलता है । इसके अतिरिक्त, अन्य क्षेत्रों के बच्चे एवं कर्मचारी एक दूसरे के बाल मेले में आते हैं और विचारों का सकारात्मक आदान-प्रदान होता है। अभिभावक एवं अन्य लोग भी मेले में उत्साह से भाग लेते हैं, जिससे उन्हें बच्चों तथा कर्मचारियों के साथ अंत:क्रिया का उत्तम अवसर मिलता है।

वर्ष में एक या दो बार, बच्चों के शिविर (एक दिन अथवा तीन दिनों के लिए) लगते हैं तथा खेल दिवस आयोजित किए जाते हैं ।

20.5.3 जन समुदाय तक पहुँचना

जैसा कि आपने अभी पढ़ा कि मोबाइल क्रैश निर्माण स्थल पर जन साधारण को निरोधक और निवारक स्वास्थ्य सेवाएँ तथा शैक्षिक सहायता भी प्रदान करते हैं ।

क्या आपको स्मरण है कि आपने डी.ई.सी.ई.-1 के खंड 7 की इकाई 32 (''परिवार तथा समुदाय को शामिल करना'') में मोबाइल क्रैश द्वारा जन साधारण की सहभागिता प्राप्त करने के बारे क्या पढ़ा था? आइए, इससे संबंधित इसकी प्रमुख विशेषताओं को पुन: स्मरण करें ।

अभिभावक एवं समुदाय की सहभागिता से उनकी (समुदाय) आवश्यकता पूर्ति हेतु गतिविधियाँ निरंतर आयोजित होती रहतीं हैं ।

- प्रौढ़ शिक्षा मोबाइल क्रैश की नियमित क्रिया है जो स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण, परिवार नियोजन, बीमारी की रोकथाम, बीमारी के दौरान देखभाल और गर्भवती तथा स्तनपान कराने वाली महिलाओं के लिए विशेषतौर पर आवश्यक देखभाल पर केन्द्रित होती है ।
- माताओं के लिए नियमित रूप से मासिक एवं तिमाही बैठक होती है । इसके अलावा, जब माताएँ केन्द्र पर आती हैं (जैसे बच्चों को दूध पिलाने) तब उनके साथ अनौपचारिक बातचीत के दौरान स्वास्थ्य से प्रासंगिक पहलुओं पर चर्चा भी की जाती है ।
- कर्मचारी प्राय: अभिभावकों के घरों के दौरों के दौरान अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों से बातचीत करने के अवसर ढूँढ निकालते हैं ।
- बच्चों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों के लिए सामूहिक क्रियाकलाप भी आयोजित किए जाते हैं ।
- ''क्षेत्रीय नाटक मंडली'' भी समय-समय पर कुछ न कुछ आयोजित करती रहती है । इस मंडली में मोबाइल क्रैश के वह लोग शामिल होते हैं जिन्हें कला प्रदर्शन में रुचि है । वे अपने नाटकों व गीतों द्वारा जन-साधारण में विभिन्न संदेश फैलाने के प्रयास करते हैं ।

- "लोक दूत" (Lok Doot) एक अन्य नाट्य मंडली है जो मोबाइल क्रैश का एक अंग है। यह नियमित अंतरालों पर जन-समुदाय में नाटक प्रदर्शित करती है । यह वर्तमान समस्याओं से सम्बन्धित मुद्दों को उठाती है और जन-जन में इस संदर्भ में जागृति पैदा करती है । इसका उद्देश्य मनोरंजन और शिक्षा – दोनों प्रदान कराना है ।
- मोबाइल क्रैश नवशिक्षितों के लिए पुस्तकें तथा समुदाय कर्मचारियों के लिए "एकलव्य" नामक एक वार्षिक पत्रिका भी प्रकाशित करता है ।

बोध प्रश्न 2

1) बताइए निम्नलिखित कथन "सही" हैं अथवा "गलत"। गलत कथनों को ठीक कीजिए ।

   i) मोबाइल क्रैश दिल्ली, कानपुर और लखनऊ शहर में दिवस देखभाल केन्द्र चलाता है ।

   .....

   .....

   ii) मोबाइल क्रैश द्वारा चलाए गए केन्द्रों में अधिकांश बच्चे पुनर्वास बस्तियों एवं मलिन बस्तियों से आते हैं ।

   .....

   .....

   iii) किसी भी मोबाइल क्रैश केन्द्र में अधिकांश बच्चों की नियमित रूप से उपस्थिति एक माह से कम पाई गई है ।

   .....

   .....

   iv) मोबाइल क्रैश के क्षेत्र-स्तरीय कार्यक्रम को तीन मुख्य पहलुओं में विभाजित किया जा सकता है – पूरक पोषण, टीकाकरण तथा अनौपचारिक शालापूर्व शिक्षा ।

   .....

   .....

   v) मोबाइल क्रैश 0-5 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों को स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं ।

   .....

   .....

2) किन्हीं पाँच महत्वपूर्ण तरीकों की सूची बनाइए जिनके द्वारा मोबाइल क्रैश कार्यकर्ता जन-समुदाय तक पहुँचने का प्रयास करते हैं?

   .....

   .....

   .....

   .....

20.6 मोबाइल क्रैश – कुछ संगठनात्मक पहलू

आइए, अब मोबाइल क्रैश के कुछ संगठनात्मक पहलुओं को देखें जिससे हमें यह आभास हो कि कार्यात्मक स्तर (functional level) पर किस तरह इस संस्था की व्यवस्था इसके कार्यक्रम की सफलता में योगदान देती है ।

आइए, सबसे पहले मोबाइल क्रैश के संगठनात्मक ढाँचें को देखें । चित्र 20.1 में संगठन की नीतियाँ बनाने वाली उच्चस्तरीय (top-level) निकाय दर्शाता है ।

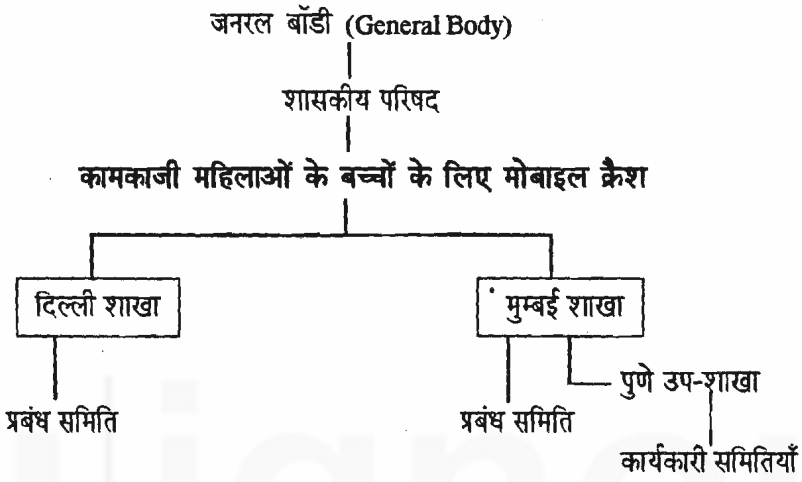

चित्र 20.1: मोबाइल क्रैश में नीतियाँ बनाने वाले प्रमुख निकाय

चित्र 20.2 में संगठनात्मक संरचना की रूपरेखा दी गई है । जैसा कि आप चित्र में देख सकते हैं, कार्यक्रम के अन्तर्गत सेवाएँ प्रदान करने के लिए कई उप-संरचनाएँ एवं संवर्ग शामिल होते हैं ।

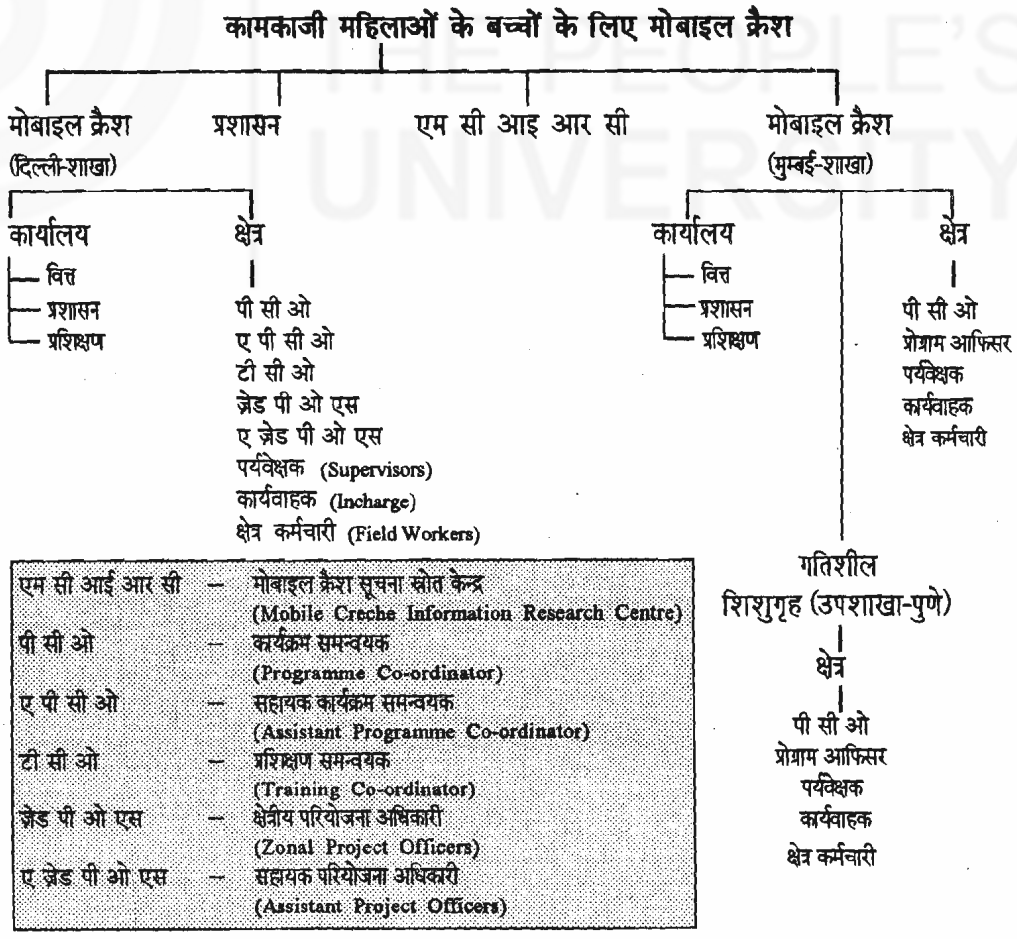

चित्र 20.2 : मोबाइल क्रैश की संगठनात्मक रूपरेखा

इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए आइए, मोबाइल क्रैश की कुछ महत्वपूर्ण संगठनात्मक विशेषताओं का अध्ययन करें, जिनका कार्यक्रम को समुदाय तक पहुँचाने और उसे प्रभावकारी बनाने में काफी योगदान रहा है।

20.6.1 एकीकरण का सिद्धांत

मोबाइल क्रैश के कार्यकर्ताओं के विभिन्न वर्गों द्वारा स्वीकृत, आत्मसात् तथा व्यवहार में लाया गया एक प्रमुख संगठनात्मक सिद्धांत एकीकरण का है (principle of integration)। एकीकरण कई स्तरों पर होता है :

- शिशु और बड़े बच्चे एक ही केन्द्र पर आते हैं और प्रत्येक आयु वर्ग के लिए योजनाबद्ध आयु अनुरूप क्रियाकलाप आयोजित किए जाते हैं ।
- स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण, खेल क्रियाएँ एंव संज्ञानात्मक विकास हेतु क्रियाएँ, नाटक, संगीत एवं कला को प्रतिदिन की अनुसूची में स्थान दिया जाता है ।
- प्रत्येक कार्यकर्ता किसी एक क्षेत्र विशेष में विशेषज्ञ बनाने की बजाए, कई प्रकार के कौशल अर्जित करता है जिससे कि वह बहुकुशल कार्यकर्ता (multi-skilled worker) बन जाता है ।
- प्रशिक्षण एवं पर्यवेक्षण समान व्यक्तियों द्वारा किया जाता है; अर्थात प्रशिक्षक व्यवस्था के बाहर नहीं अपितु उसी का एक अंग होता है ।
- मोबाइल क्रैश केन्द्र एक इकाई होने के नाते उस जनसाधारण से पृथक नहीं होता जिसे यह सेवाएँ प्रदान करता है, अपितु यह परिवारों से निकट संयोजन में होता है तथा उनकी आवश्यकताओं के प्रति अनुक्रियाशील होता है।

जो व्यक्ति स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रबंधन से सम्बन्धित हैं, उन्हें इस एकीकरण के दृष्टिकोण पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए ।

आप एक केन्द्र में विभिन्न आयु के बच्चे का एकीकरण तथा बाल देखभाल कार्यक्रम में विभिन्न गतिविधियों के एकीकरण से पहले ही सुपरिचित है । आइए, बहुकुशल कार्यकर्ता की संकल्पना को और निकट से देखें ।

20.6.2 बहु-कुशल कार्यकर्ता

न केवल मोबाइल क्रैश के कर्मचारियों, अपितु वह स्वैच्छिक कार्यकर्ता जो केवल कुछ समय के लिए ही मोबाइल क्रैश की गतिविधियों से जुड़ता है तथा जो एक या दो क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त होता हैं, यह पाएगा कि उसे अपनी कौशलों का बहुआयामी विकास करने की आवश्यकता है । सभी कार्यकर्ताओं को बजट तैयार करना, वित्त की योजना बनाना, धन इकट्ठा करना, बैठकों की कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण रखना, प्रेस वालों के साथ साक्षात्कार करना, परियोजना के प्रस्ताव तैयार करना तथा नए कर्मचारियों के प्रशिक्षण में योगदान देना – यह सब कार्य करने होते हैं । **सभी कर्मचारी इन सभी मामलों में दक्ष नहीं होंगे, पर कुल मिलाकर, सभी कर्मचारी भिन्न एवं अनेक जिम्मेदारियाँ उठाने के लिए प्रशिक्षित एवं तैयार होते हैं ।**

जबकि स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं तथा सवेतन कर्मचारियों की विभिन्न कार्य कर पाने की क्षमता, इस संस्था के संगठन के प्रमुख सिद्धांत को दर्शाते हैं, इस बात की आवश्यकता भी महसूस की गई कि सुचारू रूप से चलाने के लिए एक पद्धति की जरूरत है । उदाहरण के लिए, खाद्य सामग्री जैसे दूध पाउडर, गेहूँ एवं तेल की खरीद, भंडारण एवं वितरण के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो अंकगणित में कुशल हो। उसी प्रकार, एक व्यक्ति जिसकी हिसाब-किताब में रुचि हो, लेखा-बही के रखरखाव के पर्यवेक्षण का कार्य ज्यादा बेहतर ढंग से संभालेगा, बजट की योजना बनाने में मदद करेगा और लेखा परीक्षा (audit) संबंधी प्रश्नों का उत्तर दे पाएगा । अत:, काम के दौरान

व्यक्तियों को विशेष भूमिकाएँ और कार्य सौंपे जाते हैं और साथ ही काम के घंटों में कुछ लचीलापन भी होता है । इस प्रकार जबकि कार्यकर्ताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे भिन्न-भिन्न प्रकार के उत्तरदायित्व निभाएँ, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कार्यकर्ता अपनी मनमर्जी के कार्य चुनें । वह जो भी कार्य करते हैं उसमें एक क्रम (व्यवस्था), स्वरूप और विशिष्टता होती है । जो हम कहना चाह रहे हैं वह यह है कि सभी कार्यकर्ता स्वयं को आवश्यकता पड़ने पर कोई भी कार्य करने के लिए तैयार रखते हैं । दूसरे शब्दों में, जबकि उनकी भूमिकाएँ और कार्य निर्धारित और निश्चित होते हैं, लेकिन यह कोई कठोर नियम नहीं है जो उन्हें कार्य मुख्य रूप से सौंपा गया है, वे उसी कार्य को करें – अन्य कार्यों को करने से मना कर दें।

ऐसे कार्यक्रम के प्रबंधन में मूल मुद्दा कर्मचारियों के प्रशिक्षण का होता है । अगले उपभाग में उस प्रशिक्षण संबंधी चर्चा है जो मोबाइल क्रैश अपने कर्मचारियों को प्रदान करता है ।

20.6.3 कर्मचारी प्रशिक्षण

बच्चों की देखभाल से जुड़ी हुई किसी संस्था में कार्यकर्ताओं की संख्या अन्य संस्थाओं के मुकाबले ज्यादा होती है । किसी भी बाल देखभाल कार्यक्रम में कर्मचारियों की आवश्यकताओं के साथ-साथ, कार्यकर्ता-बच्चों के अनुपात (worker : child ratio) का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए । यदि कार्यकर्ता बच्चों की ही सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से हो, तो दोनों का आपस में संबंध स्थापित करना आसान हो जाता है । कार्यकर्ता बच्चों के साथ बड़ी सहज़ता और स्वभाविकता से अंत:क्रिया कर सकेगा । तथापि, कार्यकर्ता और बच्चे एक ही सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से हों, यह कोई कठोर/सख्त नियम नहीं है । आपसी तालमेल स्थापित किया जा सकता है, ऐसा अक्सर देखा गया है । **बच्चे की देखभाल किस स्तर की हो रही है, यह अंतत: उस व्यक्ति पर निर्भर करता है जो देखरेख करता है ।**

बच्चों की देखरेख करने वाला एक आदर्श व्यक्ति वही है, जिसमें बहु-आयामी कार्यकुशलताएँ हैं – उसे बच्चों की शारीरिक देखभाल करने, उद्दीपन हेतु क्रियाकलाप आयोजित करने, पोषण एवं स्वास्थ्य देखभाल करने तथा उनका परिपोषण करने में समर्थ होना चाहिए। वह उच्च आत्म-सम्मान वाला/वाली होनी चाहिए तथा उसमें आत्म-विश्वास होना चाहिए । साथ ही उसमें विश्लेषणात्मक कौशल भी होने चाहिएँ, ताकि वह क्षेत्र स्तर (field level) पर आने वाली समस्याओं एवं आपातकालीन स्थितियों से निपट सके। उसे ईमानदार तथा निष्ठावान भी होना चाहिए ताकि बच्चों के अभिभावकों ने उस पर जो विश्वास प्रकट किया है, वह कायम रह सके।

अत: बच्चों को अच्छी तरह से देखभाल करने का प्रशिक्षण देने में, कार्यकर्ता का व्यक्तिगत विकास उतना ही महत्वपूर्ण होता है जितना उन्हें जानकारी तथा कौशल प्रदान करने के तरीके । वह व्यक्ति जो व्यवस्थित ढंग से काम नहीं करता है, जिसमें आत्म-सम्मान की कमी होती है और कुंठाग्रस्त रहता है, उससे बच्चे को एक सुखद परिवेश प्रदान करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती ।

परिवर्तनशील आवश्यकताओं तथा अपेक्षाओं (माँगों) के साथ, समेकित बाल देखभाल के आयाम काफी व्यापक हो गए हैं; ये केवल शारीरिक देखभाल तथा शिक्षा तक ही सीमित नहीं हैं । बच्चे की उचित देखभाल में बच्चे का समग्र विकास शामिल है, जिसके बारे में आप पढ़ चुके हैं । साथ ही इसमें लोक व्यवस्था – यानी अभिभावकों, प्राधिकारियों तथा सहकर्मियों से अंत:क्रिया शामिल है । इसमें बाल विकास के संदर्भ में संस्था के उद्देश्यों को समझना भी शामिल है ।

मोबाइल क्रैश के कर्मचारी सामान्यत: समाज के निम्न मध्य सामाजिक-आर्थिक वर्ग से होते हैं। वे प्राय: ऐसी युवा गृहणियाँ होती हैं जो बच्चों के साथ काम करने की इच्छुक होतीं हैं अथवा वह युवतियाँ जो पारिवारिक आय की वृद्धि के लिए कोई भी स्वीकार्य रोज़गार की तलाश में होतीं हैं ।

जब मोबाइल क्रैश एक संस्था के रूप में आरंभ हुई, तो जो महिलाएँ स्वेच्छा से सेवा प्रदान करने के लिए आगे आईं, वे अधिकांशत: बड़ी उम्र की थीं, जिनके अपने बच्चे बड़े हो चुके थे । प्रारम्भ में

तो उन शिशुओं को सुरक्षा प्रदान करने का प्रश्न था, जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होता था और कोई भी स्त्री जिसमें काम करने की इच्छा थी तथा जिसमें स्वभावगत मातृत्व की भावनाएँ थी, उसे इस कार्य के लिए नियुक्त किया जाता था । इन बच्चों की मूल आवश्यकताएँ पूरी करने के दौरान, **यह स्पष्ट होने लगा कि बच्चों की देखभाल करने वाले व्यक्ति में बच्चों का लालन-पालन करने के विशेष कौशल होने चाहिएँ – जैसे कि बच्चों की आयु के अनुरूप उद्दीपन हेतु गतिविधियाँ आयोजित कर पाना, इस बात की जानकारी होना कि किस आयु वर्ग में किस प्रकार के भोजन की कितनी मात्रा में आवश्यकता होती है और उन्हें यह किस प्रकार से दिया जाए, जानकारी इत्यादि ।** अत: बच्चों की देखभाल एवं परिपोषण के साथ-साथ महिलाओं को प्रशिक्षण देने की आवश्यकता महसूस होने लगी ताकि वे बच्चों को बेहतर ढंग से सेवाएँ प्रदान कर सकें और साथ ही कुछ युवा महिलाओं को भी कार्यकर्ता के रूप में भर्ती किया गया ।

बाल देखभाल कार्यकर्ताओं के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे उन पारम्परिक प्रचलनों को बनाए रखें/समर्थन करें । जो बच्चों के लिए तर्कसंगत या उपयोगी हैं तथा हानिकारक प्रचलनों का बहिष्कार करें। उन्हें स्वयं भी पारम्परिक संस्कृति से आधुनिक "वैज्ञानिक" संस्कृति की ओर उन्मुख होना पड़ेगा ।

मोबाइल क्रैश के कार्यकर्ता की इन सभी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है । पीढ़ियों से समाज़ में अपने (औरत के) निम्न दर्जे को बिना किसी प्रतिरोध के स्वीकार करने की वजह से एक "आदर्श पत्नी" का प्रतिरूप सामने आया है, जिसका इन कार्यकर्ताओं ने भी अंत:करण (internalize) किया है। इन महिलाओं ने पहले कभी स्वयं निर्णय नहीं लिए, न ही अकेले समस्याएँ सुलझाई हैं और न ही इन्हें घर के माहौल में कभी नेतृत्व का गुण व कौशल दर्शाने का अवसर मिला है । फिर भी, काम करते समय उनसे कई दायित्व निभाने की अपेक्षा की जाती है ।

उन्हें अन्य लोगों के साथ काम करना सीखना पड़ता है तथा अन्य कार्यकर्ताओं के साथ अपना दायित्व बाँटना सीखना होता है । सामूहिक वार्ता में सक्रिया रूप से भाग लेना सीखना पड़ेगा और यदि जरूरत पड़े तो, अपने से वरिष्ठ अधिकारियों (कार्यकर्ताओं) द्वारा लिए गए निर्णयों का विरोध भी करना पड़ सकता है ।

अत: **कार्यकर्ताओं के व्यक्तित्व का विकास करना आवश्यक है ।** उन्हें एक मित्रतापूर्ण दृष्टिकोण तथा चालाकीपूर्ण दृष्टिकोण; आलोचनात्मक मूल्यांकन तथा द्वेषपूर्ण मूल्यांकन; काम में वस्तुनिष्ठता तथा उदासीनता को समझना एवं उनमें अंतर करना सीखना है । **ये गुण अतिसूक्ष्म हैं और केवल निरंतर बोध व प्रयास द्वारा विकसित किए जा सकते हैं ।**

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, संस्था ने बैठकों तथा कार्यशालाओं के रूप में लगातार होने वाली अंत: क्रियाओं की एक पद्धति विकसित की है, जहाँ सभी को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और सामूहिक निर्णयों के प्रति दायित्व की भावना विकसित की जाती है । बैठकों के लिए उद्देश्य के अनुसार इस बात का निर्णय लिया जाता है कि कौन कार्यकर्ता बैठक में शामिल होंगे । अत: एक ही स्तर पर काम कर रहे लोगों, उदाहरण के लिए केन्द्रों के पर्यवेक्षकों, की बैठक आयोजित की जाती है जहाँ वे कई मुद्दों पर चर्चा करते हैं । इसके अलावा, एक केन्द्र अथवा एक क्षेत्र जिसमें कई केन्द्रों का समूह होता है, में विभिन्न स्तरों पर काम करने वाले सभी कर्मचारियों की भी बैठकें होती हैं ।

इन औपचारिक तथा संरचित बैठकों के अलावा, **अनौपचारिक बैठकों** के लिए भी कई अवसर होते हैं । उदाहरण के लिए, भोजन के समय केन्द्र के सभी कर्मचारी एक साथ खाना खाते हैं — वे न केवल अपना खाना बाँटते हैं, अपितु कार्य-स्थल तथा घर की बातें भी एक दूसरे से करते हैं।

चर्चा करने तथा निर्णय लेने के लिए जो मुद्दे उठाए जाते हैं उनमें प्रशासनिक समस्याएँ, जैसे भोजन, शिक्षण सामग्री तथा अन्य उपकरण का संग्रहण; कर्मचारियों की समस्याएँ, जैसे अवकाश के नियम, भर्तियाँ, नियमित तैनातियाँ; मूल्यांकन तथा वेतन वृद्धि इत्यादि मुद्दें शामिल होते हैं। इसके अलावा

कर्मचारियों को बड़े मुद्दों, जैसे महिलाओं का समाज़ में दर्जा, परिवार तथा समाज़ में उनकी अपनी (कार्यकर्ता की) भूमिका तथा पर्यावरण संरक्षण के बारे में भी चिंतन करने के लिए प्रेरित किया जाता है। विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों द्वारा, जैसे भूमिका अभिनय, नाटक, संगीत संबंधी खेल, पिकनिक तथा शिविरों द्वारा उनकी सोच का विस्तार करने का प्रयत्न किया जाता है ।

बच्चे की देखभाल संबंधी सिद्धांतों का ज्ञान कार्यकर्ताओं को नियमित कार्यशालाओं द्वारा दिया जाता है । इन कार्यशालाओं में पढ़ाने की विषय-वस्तु और तरीके, स्वास्थ्य शिक्षा तथा सृजनात्मक कला से सम्बन्धित प्रशिक्षण दिया जाता है ।

मोबाइल क्रैश ने समय के साथ-साथ प्रशिक्षण का मानकीकरण किया है और **यह पाया है कि कार्यकर्ता में कम से कम दसवीं कक्षा तक की योग्यता होना आवश्यक है ।** ऐसा इसलिए है क्योंकि कार्यकर्ता में सभी तथ्यों को लिखने का सामर्थ्य होना आवश्यक है, ताकि आवश्यकता पड़ने पर वे अपने लिखी हुई टिप्पणियाँ देख सके । यह बात विशेषकर स्वास्थ्य शिक्षा के मामले में बहुत महत्वपूर्ण है ।

कर्मचारियों को प्रशिक्षण मोबाइल क्रैश के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा दिया जाता है, जिन्हें इस कार्यक्रम का अनुभव प्राप्त होता है । विशेषज्ञों जैसे चिकित्सकों, अध्यापकों तथा समाज़-कार्य में स्नातक किए व्यक्तियों द्वारा उनकी सहायता तथा मार्गदर्शन किया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर, यदा-कदा क्षेत्र विशेष के विशेषज्ञों जैसे वकीलों या प्रबंध विशेषज्ञों को प्रशिक्षण के दौरान, कार्यशाला अथवा बैठक आयोजित करने के लिए आमंत्रित किया जाता है ।

बच्चों की देखभाल मे कार्यरत कार्यकर्ताओं को अन्य संस्थाओं में भी भेजा जाता है, ताकि वे वहाँ की कार्यप्रणाली को देखें और उनसे कुछ सीखें तथा नए विचार ग्रहण करें । इन अंत:क्रियाओं द्वारा कार्यकर्ताओं में अपने कार्य के प्रति बेहतर समझ विकसित होती है और साथ ही इस क्षेत्र में कार्य कर रहे अन्य लोगों से सम्पर्क बढ़ाने का अवसर मिलता है ।

कार्यशालाओं के दौरान कार्यकर्ताओं को शिक्षाप्रद फिल्में दिखाई जाती हैं, अन्य युक्तियुक्त सामग्री दी जाती है तथा विशेषज्ञों के साथ अंत:क्रिया के अवसर मिलते हैं, ताकि मोबाइल क्रैश के कार्यक्रम को और सुदृढ़ बनाया जा सके ।

प्रशिक्षण के उद्देश्य निम्नवत हैं :

- बाल देखभाल कार्यकर्ताओं को कार्यशालाओं की विषय-वस्तु एवं तर्काधार को समझना है। बच्चों का शिक्षण उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा संदर्भ को ध्यान में रखकर देना है – उदाहरण के लिए, शिक्षण के दौरान प्रयोग किए जाने वाले शब्द और दिए जाने वाले उदाहरण ऐसे होने चाहिएँ जिनसे बच्चें परिचित हों ।
- कार्यकर्ताओं को सभी आयुवर्ग के बच्चों के साथ काम करना सीखना होता है और अभिभावकों तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ भी अंत:क्रिया के कौशल अर्जित करने की आवश्यकता होती है ।
- कार्यकर्ताओं को एक दल के रूप में एक दूसरे के साथ काम करने के लिए कौशलों को विकसित करना होगा और भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के साथ मिलकर काम करना सीखना होगा।
- कार्यकर्ताओं को वित्तीय संसाधनों का बजट बनाना तथा अपने समय को व्यवस्थित करना सीखना होगा ।

मोबाइल क्रैश संस्था इस बात को स्वीकार करता है कि एक अच्छे स्तर के प्रारंभिक शिक्षा एवं देखभाल कार्यक्रम में (अर्थात, ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम में) बहुत सारे घटक होने चाहिएँ, जिनमें से महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं :

- बच्चों के लिए विकासात्मक रूप से यथोचित एक पाठ्यक्रम ।

- पर्यवेक्षी सहायता तथा कार्य के दौरान प्रशिक्षण ।
- कार्यकर्ता-बच्चों का अनुकूलतम अनुपात ।
- बच्चे के सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रति संवेदनशीलता ।
- बच्चे के विकास में अभिभावकों तथा परिवार के अन्य सदस्यों को शामिल करना ।
- कार्यक्रम का मूल्यांकन और उस पर प्रतिपुष्टि (फीडबैक) जिससे कि कार्यक्रम का अनुवीक्षण किया जा सके और जहाँ आवश्यक हो, संशोधन किए जा सकें ।
- अपेक्षित मानकों के संदर्भ में बाल देखभाल कार्यकर्ताओं का आलोचनात्मक स्व-मूल्यांकन ।

मोबाइल क्रैश में कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण अलग से नहीं दिया जाता – उन्हें प्रशिक्षण शिशुगृह में कार्य करने के दौरान किया जाता है । इसी कार्य के दौरान मिलने वाले अनुभव प्रशिक्षण होते हैं । **मोबाइल क्रैश में चूँकि सभी स्तरों के कर्मचारियों का प्रशिक्षण, कार्य के दौरान अनुभव के माध्यम से होता है** (training through on-the-job experience), कार्यकर्ताओं का 80 प्रतिशत समय कार्यक्षेत्र में बच्चों के साथ बीतता है, जबकि 20 प्रतिशत कार्यशालाओं में सैद्धांतिक योगदान के लिए तय होता है । प्रशिक्षण निरंतर ही ज़ारी रहता है, जिसमें प्रत्येक बाल देखभाल कार्यकर्ता को बाल सम्बन्धित विषयों में प्रशिक्षित किया जाता है – दिवस देखभाल, प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं शालापूर्व शिक्षा, बाल विकास, बाल मनोविज्ञान । इस दौरान कार्यकर्ता को सृजनात्मकता होने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है ।

प्रशिक्षु (trainees), जो संस्था के नियमित कर्मचारी नहीं होते, उन्हें वृत्तिका (stipend) दी जाती है । ऐसा निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के लोगों को संस्था में कार्य करने के लिए आकर्षित करने के लिए किया जाता है । प्रशिक्षण के इस प्रतिरूप को **"स्थानबद्ध प्रतिरूप" (internship model)** कहा जाता है, जहाँ प्रशिक्षु अनुभवी कर्मचारियों के साथ जुड़े होते हैं और उनसे सीखते हैं ।

प्रारम्भिक वर्षों में, किसी को भी प्रशिक्षण के लिए अस्वीकार नही किया जाता था । तथापि, बहुत लोग केवल शिक्षक/शिक्षिका बनने की आकांक्षा से यहाँ आते थे, और छोटे बच्चों के साथ काम करने तथा उनकी शारीरिक जरूरतों की देखभाल के कार्य करने के इच्छुक नहीं होते थे । अत: मोबाइल क्रैश ने स्वत:चयन करने की कार्यनीति बनाई । आवेदकों को पूरा एक दिन शिशुगृह में बिताने को कहा जाता था, ताकि दिनभर वे उन सारी गतिविधियों एवं क्रियाकलापों को देखें जो उन्हें वहाँ निष्पादित करनी पड़ेंगी । केवल उन्हीं व्यक्तियों को प्रवेश दिया जाता था जो इस कार्य को करने के इच्छुक होते । **तथापि, समय के साथ-साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम लड़के-लड़कियों के लिए उच्च विद्यालय शिक्षा समाप्त करने के पश्चात, रोजगार का एक विकल्प बन गया है । अत: अब ज्ञान एवं योग्यता को जाँचने हेतु लिखित परीक्षा होती है** और अंकों के आधार पर ही चयन होता है, चूँकि प्रवेश पाने के इच्छुक व्यक्तियों की संख्या भर्ती के निर्धारित प्रशिक्षुओं की संख्या से कहीं अधिक है । नियतन के लिए उपलब्ध केन्द्रों तथा वृत्तिका के लिए उपलब्ध धनराशि को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षुओं की संख्या को सीमित करना पड़ता है ।

20.7 मोबाइल क्रैश की अद्वितीय विशेषताएँ

मोबाइल क्रैश के कार्यकर्ताओं से अपेक्षा की जाती है कि उनमें कई कौशल हों – बच्चों को अन्वेषण, खोज़ एवं स्वयं जाँच के माध्यम से सिखाना, क्रियाओं व गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को पढ़ाने की योग्यता, बच्चों के मनोसामाजिक विकास का ध्यान रखना, सृजनात्मक कला को प्रोत्साहन देना, भोजन बनाना और खिलाना, बीमारियों को पहचानना और आवश्यक कार्यवाही करना, औषधियाँ देना, तथा स्वास्थ्य शिक्षा देना । इसके अलावा, उनमें निर्णय ले पाने की योग्यता भी होनी चाहिए । क्षेत्र स्तर में आने वाले अवरोधों के बावजूद, स्वयं को उसके अनुरूप ढालकर प्रभावशाली ढंग से काम करने की क्षमता भी होनी चाहिए । उपरोक्त में से कई कारक तथा कुछ अन्य कारक इस संस्था पर लागू होते हैं ।

आइए, अब मोबाइल क्रैश के कुछ अद्वितीय गुणों के बारे में पढ़ें ।

- अधिकांश अन्य संस्थाओं में जो होता है ठीक उसके विपरीत, मोबाइल क्रैश के कर्मचारियों को बहुत ही भीषण/कठोर परिस्थितियों में बच्चों की सभी आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ता है । प्राय: केन्द्र इतने सुदूर निर्माण स्थलों में स्थित होते हैं जहाँ परिवेश के नाम पर केवल रोड़े-पत्थर, रेत तथा लोहे की छड़ें होती हैं । केन्द्रों पर आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता, और कई बार बाल देखभाल कार्यकर्ताओं को निकटतम परिवहन तक पहुँचने के लिए बहुत दूर तक चलना पड़ता है। कई बार, चूंकि भवन-निर्माता सोचता है कि शिशुगृह अस्थाई हैं, वह वहाँ पर अपेक्षित सुविधाएँ भी मुहैय्या नहीं कराता । यहाँ तक की आम जन सुविधाएँ, जैसे शौचालय, भी प्राय: नहीं होते ।

- चूँकि सारी माताएँ काम पर जाती हैं इसलिए, या तो वे इतनी व्यस्त होती हैं या वे बच्चों की शिक्षा के प्रति इतनी अनिभिज्ञ होती हैं कि इस बारे में चिंता ही नहीं करती कि बच्चे को प्रतिदिन केन्द्र में जाना है । **अत: बाल देखभाल कार्यकर्ता प्रतिदिन बच्चों को उनके घरों से ले जाते हैं** । इसका लाभ यह होता है कि कर्मचारी प्रतिदिन अनौपचारिक रूप से माताओं से मिलते हैं और उनकी वर्तमान समस्याओं के बारे में जानकर उन्हें सुलझाने में उनकी मदद करते हैं । समस्या किसी भी प्रकार की हो सकती है – जैसे कि बच्चा बीमार है, अथवा परिवार में कोई झगड़ा हो गया है – कार्यकर्ता को हर प्रकार की समस्या का सामना करने के लिए तैयार रहना होता है ।

- **निर्माण स्थल पर मज़दूर परिवार आते-जाते रहते हैं, इस कारण हर महीने नए बच्चे कार्यक्रम में शामिल होते हैं** । प्राय: 20 से 30 प्रतिशत बच्चे केन्द्र में नए होते हैं । अत: बाल देखभाल कार्यकर्ताओं को मजबूरन स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से संबंधित संदेश कई बार दोहराने पड़ते हैं । दोहराने से यह प्रक्रिया नीरस ना बन जाए, इसके लिए कार्यकर्ताओं को संदेश देने के तरीकों में नवीनता लानी पड़ती है और कार्यक्रम को अच्छी प्रकार कार्यान्वित करने के लिए नए तरीकों के बारे में सोचना पड़ता है ।

- चूँकि कार्यकर्ताओं को सारा प्रशिक्षण केवल कार्यकाल के दौरान (on the job) मिलता है, और घर पर सैद्धांतिक पक्ष के बारे में पढ़ाई करने का उन्हें समय नहीं मिलता, अत: कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण के दौरान सारी जानकारी सरल और स्पष्ट रूप से देनी होती है – ऐसी जानकारी जो आसानी से याद रह सके और जिसे पुन: स्मरण किया जा सके। इसके लिए सभी कार्यकर्ताओं से – जिनमें प्रशिक्षक भी शामिल हैं – यह अपेक्षा की जाती हैं कि वे अपने कौशलों को बढ़ाने या उनके उन्नयन के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लें । **अत: विषयवस्तु की अभिवृद्धि तथा कौशलों की संवृद्धि के लिए प्रशिक्षण एक सतत प्रक्रिया है।**

- **कार्यकर्ताओं को सहायक शिक्षण सामग्री का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, और अनुभवों से यह ज्ञात होता है कि जब कार्यकर्ता स्वयं सामग्री तैयार करते हैं, तो वे संदर्भ को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और सामग्री का प्रयोग ज्यादा प्रभावशाली ढंग से कर पाते हैं** । वे समूहों में कार्य करते हैं, लक्ष्यों पर चर्चा करते हैं और आवश्यक सामग्री तैयार करते हैं । बार-बार अनुप्रयोग करके अधिकांश कार्यकर्ता रोजमर्रा के ''व्यर्थ'' पदार्थों जैसे गत्ते, खाली डिब्बे, पुरानी बोतलों और अखबारों से ड्राइंग, हस्तकला और कठपुतली बनाने में कुशल हो जाते हैं ।

- बच्चों की उच्चकोटि की देखभाल सहायक और पर्यवेक्षी उपायों से सुनिश्चित होती है ।

20.7.1 सहायक उपाय (Supportive Measures)

- चूंकि अधिकांश कार्यकर्ता स्वयं पिछड़े हुए सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से आते हैं, अत: उनका स्वास्थ्य भी शारीरिक या भावात्मक रूप से खराब हो सकता है । उन्हें काफी देखभाल

और सहायता की आवश्यकता होती है। **सभी कार्यकर्ताओं के स्वास्थ्य की नियमित रूप से जाँच होती है,** और उन्हें आवश्यक उपचार का परामर्श दिया जाता है। यदि आवश्यकता हो, तो उन्हें अस्पतालों में भेज दिया जाता है । **कार्यकर्ताओं को पूरक आहार भी दिया जाता है।**

- जिन कार्यकर्ताओं को स्वास्थ्य की गंभीर समस्या होती है, उन्हें विशेष वित्तीय सहायता भी दी जाती है । सामूहिक स्वास्थ्य बीमे के लिए भी कदम उठाए गए हैं ।
- सामूहिक क्रियाओं, नाटक, योगाभ्यास, संगीत इत्यादि पर आधारित विशेष कार्यशालाओं और साथ ही कार्यकर्ताओं की अनौपचारिक गोष्ठी और पिकनिकों द्वारा, कार्यकर्ताओं के मनो-सामाजिक पहलू को प्रोत्साहन मिलता है। इन क्रियाओं द्वारा न केवल उनमें आत्म-विश्वास और करुणा जागृत होती है, बल्कि कार्यकर्ताओं को मित्रता तथा सहोदरों को सहयोग देने का अवसर भी मिलता है।
- सभी को वित्तीय जानकारी और कानून के संबंध में जानकारी (कानूनी साक्षरता; legal literacy) अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । इसके अन्तर्गत उन्हें बैंकिंग, लेन-देन संबंधी, केन्द्रों में धन की वयवस्था करने, बजट बनाने और निधि का उचित उपयोग करने के बारे में सीखने के अवसर प्रदान किए जाते हैं । महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों पर, विशेषकर विवाह एवं धन के संदर्भ में, दिए जाने वाले विशेष व्याख्यान यह सुनिश्चित करते हैं कि वे अपनी व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत जिंदगी सुचारू रूप से चला सकें ।

20.7.2 पर्यवेक्षी उपाय (Supervisory Measures)

- संसाधनों के उचित उपयोग एवं धन के उचित आवंटन को सुनिश्चित करने के लिए सभी केन्द्रों में अतिसावधानी से **अभिलेख** तैयार किए जाते हैं। कार्यकर्ताओं को अभिलेख बनाने, स्टॉक का निरीक्षण करने और गुणवत्ता नियंत्रण करने संबंधी प्रशिक्षण दिया जाता है । इससे ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के साथ उत्तरदायित्व की भावना का विकास भी होता है, जो कि कार्यकर्ता के व्यक्तित्व के मूलभूत गुण हैं ।
- **सभी स्तरों के कार्यकर्ताओं के बीच निरंतर अंत:क्रिया,** संस्था के प्रति निष्ठा की भावना पैदा करती है । इससे सभी कार्य सुचारू रूप से चलते हैं, ताकि कार्यक्रम की क्वालिटी पर कोई असर न पड़े । उदाहरण के तौर पर, यदि कोई कार्यकर्ता जिसका उत्तरदायित्व केन्द्र को सुबह खोलने का है और उसके पास केन्द्र की चाबी है, किसी विशेष दिन काम पर नहीं जा सकता/सकती, तो वह यह निश्चित करता/करती है कि वह चाबी समय से पहले किसी अन्य सहकर्मी को सौंप दे । अथवा यदि किसी केन्द्र में कार्यकर्ताओं की कमी है, तो प्रशासन से अनुदेश आने की प्रतीक्षा किए बिना, कार्यकर्ता आपस में मिलकर ही इसका प्रबन्ध कर लेते हैं कि किसी अन्य व्यक्ति को वहाँ भेजा जाए ।
- **नियमित और आवधिक बैठकें** होती हैं जिससे सभी कार्यकर्ताओं द्वारा की गई क्रियाओं का निरंतर मूल्यांकन हो जाता है । इसके दौरान उनकी शिकायतों को सुना जाता है और उनके द्वारा किए गए विशेष प्रयासों की प्रशंसा भी की जाती है । यह बैठकें आपस में जानकारी बाँटने का मंच भी होती हैं ।
- **प्रत्येक कार्यकर्ता के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन उसके वरिष्ठ अधिकारी तथा अधीनस्थों दोनों द्वारा ही किया जाता है,** तथा यह मूल्यांकन लिखित रूप में भी किया जाता है । यह मूल्यांकन की प्रक्रिया सहभागी (participatory) है, क्योंकि वह कार्यकर्ता जिसका मूल्यांकन किया जा रहा है उसे भी इस चर्चा और विचार-विमर्श में शामिल किया जाता है, और उसे अपने बचाव में कुछ कहने का और अपनी कमियों को सुधारने का अवसर दिया जाता है ।
- कम बजट वाले कल्याण संगठनों/संस्थाओं में कर्मचारियों को आर्थिक प्रोत्साहन दिए बिना प्रेरित करना सबसे कठिन कार्य है । वार्षिक वेतन वृद्धि, पदोन्नति और अतिसाधारण काम के लिए पारितोषिक – यह सब तो होते हैं । किन्तु वेतन वृद्धि के रूप में बहुत धन नहीं मिल पाता

और इस क्षतिपूर्ति करने हेतु अन्य तरीके अपनाए जाते हैं – **जैसे कार्यकर्ता को मान्यता दी जाती है, उस पर विश्वास किया जाता है और उसकी व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने में मदद की जाती है** । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, प्रशासन नवीन तरीकों का प्रयोग करता है । उदाहरण के लिए, कार्यकर्ता की समर्थता, उसके शैक्षिक स्तर के बजाय उसके दृष्टिकोण और अभिवृत्ति से आँकी जाती है । किन्तु दृष्टिकोण और अभिवृत्ति को क्रमबद्ध नहीं किया जा सकता और शिक्षा के स्तर को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता । अत: इस स्थिति के समाधान के लिए नई नाम पद्धतियों का गठन किया जाता है और उसी के आधार पर सभी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को समानंतर पदोन्नति दी जाती है ।

- कार्यक्रम, प्रशिक्षण तथा पारिश्रमिक में लचीलापन होता है – यह आवश्यक भी है। उदाहरण के तौर पर, कार्यक्रम का स्वरूप श्रमिकों के काम करने के समयानुसार, केन्द्र चलाने के लिए उपलब्ध सुविधाओं और जन-समुदाय की जानकारी के स्तर पर निर्भर करेगा । उसी प्रकार, प्रशिक्षण में भी व्यावहारिक पक्ष और सैद्धांतिक पक्ष, सूचना और व्यक्तिगत विकास में संतुलन बनाना होगा और यह इस बात पर निर्भर करेगा कि प्रशिक्षुओं की परिस्थितियाँ क्या हैं, प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध समय कितना है एवं क्षेत्र के स्तर पर क्या प्रासंगिकता है । सीमित वित्त के कारण भी लचीलापन लाना आवश्यक हो जाता है । उदाहरण के तौर पर, हालांकि आने-जाने के समय व पर्यटन अनुदान इत्यादि के लिए कठोर नियम हैं, किन्तु यदि दिए जाने वाले भत्ते के लिए धन की कमी होती है, तो काम करने के समय को थोड़ा कम करके, क्षतिपूर्ति की जा सकती है – यही लचीलापन है ।

अत: यह स्पष्ट है कि सतत उत्प्रेरण और काम में संतुष्टि के बगैर, अच्छे स्तर की बाल देखभाल संभव नहीं है । और यह सब केवल व्यक्तिगत अंत:क्रिया, कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए काम को मान्यता देकर, उनकी सराहना करके ही संभव है । मोबाइल क्रैश में इसी का अनुसरण किया जा रहा है ।

20.8 बाल देखभाल सेवाओं के लिए आर्थिक संसाधन जुटाना

बच्चों को अच्छे स्तर की देखभाल उपलब्ध कराना आसान बात नहीं । विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों के लिए धन की आवश्यकता होती है, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं :

- बच्चों को मूलभूत सुखसुविधा प्रदान करना – भोजन, औषधियाँ और कपड़े
- शिक्षण में सहायक उपकरण और सृजनात्मक कला
- समुदाय कार्य — रंगमंच, गतिविधियाँ और बैठकें
- बाल देखभाल कार्यकर्ताओं के वेतन
- कर्मचारी कल्याण एवं कर्मचारी प्रशिक्षण
- केन्द्रों को आपूर्ति पहुँचाना

ऐसे कार्यक्रम के लिए धन बहुत से स्रोतों से आता है :

- स्वयंसेवी और इच्छुक दाताओं द्वारा स्वैच्छिक दान
- नियोक्ताओं एवं निर्माणकर्ताओं द्वारा योगदान
- केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड (सरकार)
- विदेशी एजेन्सियाँ तथा संस्थाएँ
- स्वयंसेवियों द्वारा धन एकत्रित करने के क्रियाकलाप
- प्रायोजित कार्यक्रम (sponsorship programme) जिसमें प्रायोजक द्वारा एक बच्चा अपनाया जाता है और प्रतिवर्ष उसका खर्चा दिया जाता है।

विभिन्न स्रोतों से आय के अनुपात प्रत्येक वर्ष में भिन्न-भिन्न होते हैं, जिसका एक उदाहरण संलग्नक 1 में दिया गया है ।

20.9 कार्यक्रम का प्रभाव

निर्माण स्थल पर रह रहे बच्चों और उनके परिवारों को फायदा पहुँचाने के अलावा, अन्य स्तरों पर भी इस संस्था ने प्रभाव डाला है । आइए, उनमें से कुछ को जानें ।

- **क्षेत्र विशेष के विशेषज्ञों का आदान-प्रदान (Expertise Shared)**

  जैसे-जैसे यह कार्यक्रम एक व्यापक, समेकित और नवीन प्रतिरूप के रूप में उभरा, अन्य कई एजेन्सियाँ एवं समुदाय इसके अनुभव से कुछ सीखने के लिए इसकी ओर आकर्षित हुए ।

  अत: मोबाइल क्रैश तथा समाज कार्य एवं बाल विकास से जुड़ी कुछ प्रमुख शैक्षिक संस्थानों, आयुर्विज्ञान कॉलेजों के निरोधक और सामाजिक औषधि विभागों तथा अनुसंधान संस्थाओं के बीच विशेषज्ञों का आदान-प्रदान किया जाता है ।

- **नेटवर्क करना/अन्य संस्थाओं से संपर्क करना**

  परिस्थितियों को देखते हुए, मोबाइल क्रैश ने विभिन्न क्षेत्रों में प्रवीणता प्राप्त की है, जैसे – बाल-देखभाल, नवीन शिक्षण पद्धतियाँ, कर्मचारी प्रशिक्षण, सीमित संसाधनों से एक स्वयंसेवी संस्था की प्रबंध व्यवस्था और जन-साधारण में संदेश के प्रचार के लिए सृजनात्मक तरीकों को अपनाना, जैसे रंगमंच और कठपुतली का तमाशा । मोबाइल क्रैश की इस विशेषज्ञता की मान्यता के फलस्वरूप और मोबाइल क्रैश द्वारा अन्य संस्थाओं को संपर्क करने के फलस्वरूप, प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा को सुदृढ़ करने में सहायता मिली ।

- **पक्ष समर्थन (Advocacy)**

  समय के साथ, यह स्पष्ट हो गया कि औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्र में सभी कामकाज़ी महिलाओं के बच्चों के लिए एक व्यापक सेवा के रूप में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) का समर्थन करने की आवश्यकता थी ।

यह दिलचस्प बात है कि जब मोबाइल क्रैश की शुरुआत हुई तो नीति निर्धारकों का ई.सी.सी.ई और बाल देखभाल कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की आवश्यकता की ओर ध्यान बिल्कुल नहीं था, और इस ओर उनका ध्यान आकर्षित करना पड़ा । इनमें सरकारी कर्मचारी, नगर निगम प्राधिकारी, दाता, निर्माणकर्ता एवं शैक्षिक संस्थान शामिल हैं । अंतत: पच्चीस वर्ष तक काम करने के पश्चात, और बच्चों को अच्छी देखभाल प्रदान करने का एक सफल उदाहरण बनने के बाद, मोबाइल क्रैश बच्चों के साथ कार्यरत अन्य संस्थाओं के सहयोग से एक राष्ट्रीय शिशुगृह मंच (National Forum for Creches) स्थापित करने में सहायक रहा है । बाल विकास के क्षेत्र में नीति निर्धारकों ने मोबाइल क्रैश के प्रतिरूप को अपनी वित्तीय योजनाओं में समाविष्ट किया है, और निर्धन वर्ग के बच्चों से सम्बन्धित विषयों पर आयोजित कार्यशालाएँ मोबाइल क्रैश के क्षेत्रीय कर्मचारी और आयोजकों के बहुमूल्य अनुभव का प्रयोग करने में पीछे नहीं रहती ।

बोध प्रश्न 3

1) क्या कोई भी व्यक्ति मोबाइल क्रैश के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित हो सकता है ? कारण सहित उत्तर दें ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) मोबाइल क्रैश द्वारा अपने बाल देखभाल कार्यकर्ता को दिए जाने वाले प्रशिक्षण की दो महत्वपूर्ण विशेषताएँ लिखें ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) मोबाइल क्रैश के अपने कार्यक्षेत्र में आने वाले किसी भी प्रतिबंध के बारे में लिखें और यह भी लिखें कि संस्था किस प्रकार इसका सामना करती है ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

20.10 सारांश

मोबाइल क्रैश एक स्वयंसेवी संस्था है जो सन् 1969 में सुश्री मीरा महादेवन द्वारा निर्माण स्थलों पर श्रमिकों के बच्चों की जरूरतों की ओर ध्यान देने के लिए प्रारम्भ की गई । ये बच्चे विषम जोखिम भरी परिस्थितियों में और उपेक्षित पड़े रहते थे, जबकि इनके अभिभावक निर्माण स्थल पर काम करते थे । इसके बाद, संस्था ने अपनी गतिविधियों को मलिन बस्तियों तथा पुनर्वास बस्तियों तक विस्तृत किया ।

मोबाइल क्रैश एक ऐसी संस्था है जो काफी प्रभावशाली कार्यक्रम चला रही है । इसके दिवस देखभाल केन्द्र दिल्ली, मुम्बई एवं पुणे में बड़े निर्माण स्थलों, मलिन बस्तियों और पुनर्वास बस्तियों में स्थित हैं। किसी भी निर्माण स्थल पर केन्द्र अस्थाई होते हैं और एक बार जब निर्माण कार्य पूरा हो जाता है, तो वह केन्द्र बन्द हो जाता है और एक नया केन्द्र अन्य निर्माण स्थल पर खुल जाता है । मलिन बस्तियों एवं पुनर्वास बस्तियों में बने केन्द्र ज्यादा स्थायी होते हैं । इन केन्द्रों पर उपलब्ध सेवाओं में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, पूरक पोषण, अनौपचारिक शिक्षा एवं जन-साधारण तक पहुँचाना शामिल है ।

यह संस्था कई तरीकों से अद्वितीय है । इसकी बहुत सी महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं – जैसे कार्यक्रम की प्रबन्ध व्यवस्था, कार्यकर्ताओं को दिया जाने वाला प्रशिक्षण — इस कार्यक्रम को एक अनुकरणीय

आदर्श बनाता है। यह संस्था काम करने का ऐसा वातावरण बनाने में काफी हद तक सफल रही है जो लाभार्थियों को प्रभावशाली सेवाएँ प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

इस कार्यक्रम को कई स्रोतों से वित्तीय सहायता मिलती है । इससे भी महत्वपूर्ण यह बात है कि मोबाइल क्रैश एवं शिक्षा तथा बाल देखभाल में कार्यरत अन्य संस्थाओं के बीच प्राय: विशेषज्ञ मतों का आदान-प्रदान होता रहता है ।

20.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) ग

ii) ग

iii) घ

2) बाल देखभाल केन्द्रों की स्थापना मोबाइल क्रैश द्वारा श्रमिकों के बच्चों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए की गई । किसी निर्माण स्थल पर मोबाइल क्रैश केवल तब तक रहता है, जब तक निर्माण कार्य चल रहा हो । जैसे-जैसे मजदूर वहाँ से कहीं अन्य कार्य-स्थल चले जाते हैं, वह केन्द्र बंद हो जाता है ताकि किसी अन्य निर्माण स्थल पर नया केन्द्र खोला जाए । कई बार, निर्माण स्थल में होने के बावजूद भी केन्द्र एक जगह से दूसरी जगह परिस्थितियों वश स्थानान्तरित करना पड़ता है । अत:, इस कार्यक्रम में गतिशीलता निहित है ।

बोध प्रश्न 2

1) i) गलत । मोबाइल क्रैश संस्था दिल्ली, मुम्बई और पुणे में दिवस देखभाल केन्द्र चलाती हैं।

ii) गलत । मोबाइल क्रैश द्वारा संचालित केन्द्रों में अधिकांशत: वह बच्चे जाते हैं जो निर्माण स्थलों पर रहते हैं ।

iii) गलत । अधिकांशत: किसी विशेष मोबाइल क्रैश में जाने वाले बच्चों की लगातार उपस्थिति की अवधि तीन महीने से भी कम होती है ।

iv) गलत । मोबाइल क्रैश के क्षेत्रीय कार्यक्रम के तीन प्रमुख पहलू हैं : स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण; शिक्षा और संज्ञानात्मक विकास; जनसमुदाय तक पहुँच ।

v) गलत । मोबाइल क्रैश 0-12 वर्ष की आयुवर्ग के बच्चों और उनके अभिभावकों को स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ उपलब्ध कराता है । कुछ सुविधाएँ जैसे प्राथमिक चिकित्सा सहायता, निर्माण स्थल पर काम करने वाले सभी लोगों को दी जाती है ।

2) उपभाग 20.5.3 देखें ।

बोध प्रश्न 3

1) नहीं । व्यक्ति के पास कम से कम दसवीं कक्षा तक की शैक्षिक योग्यता होनी चाहिए । इसके अलावा उसे मोबाइल क्रैश द्वारा प्रार्थी के ज्ञान एवं योग्यता के मूल्यांकन हेतु आयोजित लिखित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना होगा ।

2) i) प्रशिक्षण का प्रतिरूप ''अंतरंग प्रतिरूप'' है । प्रशिक्षुओं को वृत्तिका मिलती है और वे अनुभवी कार्यकर्ताओं से सीखते हैं, जिनके साथ उन्हें जोड़ा जाता है ।

ii) सेवा के दौरान हुए अनुभव से ही प्रशिक्षण प्राप्त होता है। अत:, प्रशिक्षु 80 प्रतिशत समय बच्चों के साथ कार्यक्षेत्र में बिताते हैं और 20 प्रतिशित समय कार्यशालाओं में सैद्धांतिक पक्ष के लिए होता हैं ।

3) भाग 20.7 देखें ।

मोबाइल क्रैश के आय और व्यय का अनुपात – मुम्बई शाखा (सन् 1987-88)

आय

सरकार (केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड)		35.6%
अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ	• इंडो जर्मन सोशल सर्विस सोसाइटी	17.6%
	• ऑक्सफेम (Oxfam)	9.8%
	• ऐडअत एक्शन फ्रांस (Aide de Action France)	5.3%
इंडियन एजेन्सी चाइल्ड रिलीफ एंड यू (Indian Agency Child Relief & You)		3.3%
सामान्य दान (General Donation)		21.7%
बाल संरक्षण (Child Sponsorship)		0.3%
धन एकत्रीकरण कार्यक्रम (Fund raising Programme)		1.0%
विविध आय (Sundry Income)		5.4%
		100.0%

व्यय

अवसंरचना	• क्षेत्रीय कर्मचारी	50.7%
	• प्रशासन	4.3%
	• धन एकत्र करना	0.8%
	• मानदेय	0.8%
	• कर्मचारी कल्याण	10.3%
	• प्रशासनात्मक (परिचालन)	6.6%
कार्यक्रम	• सामान्य सेवा	2.4%
	• स्वास्थ्य सेवा	5.4%
	• पोषण	12.0%
	• शिक्षा	3.8%
	• अनुसंधान	2.1%
उपकरण		0.8%
		100.0%

स्रोत : वार्षिकी रिपोर्ट, 1987-88, मोबाइल क्रैश – मुम्बई शाखा